IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# माल पहाड़िया जनजाति की सामाजिक स्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण

## Historical Analysis of the Social Status of the Mal PahariaTribe

### (झारखंड राज्य के गोड्डा जिला के विशेष संदर्भ मे)

**(With special reference to Godda district of Jharkhand state)**

**Dr. Sandeep Kumar Mandal**

**Head,Department of History, Degree College Mahagama Godda, Jharkhand 814154**

**प्रस्तावना :-** झारखंड में मुख्य रूप से माल पहाड़िया जनजाति संथाल परगना प्रमंडल में निवास करती है। यह जनजाति प्राचीन जनजातियों में से एक है। राजमहल पहाड़ियों का यह जनजाति मूल निवासी है। यह जनजाति साहिबगंज, पाकुड़, गोड्डा, देवघर और जामताड़ा जिले में सामान्य तौर पर पाई जाती है। जनगणना 2001के अनुसार झारखंड में माल पहाड़िया जनजाति की आबादी 115093 था जो अब 2011 जनगणना के अनुसार इनकी आबादी 135797 हो गया है। प्राचीन जनजातियों में यह एक ऐसी जनजाति है जिनकी आबादी लगातार बढ़ रही है लेकिन इनकी सामाजिक विकास की वृद्धि काफी धीमी है। क्योंकि माल पहाड़िया जनजाति के अधिकांश परिवार गरीबी में जीवन यापन कर रहे हैं। क्योंकि इनके पास रोजगार का अभाव है, पर्याप्त मात्रा में शिक्षा का अभाव है, निवास स्थान दुर्गम स्थान पर है। इन सभी कारणो से यह जनजाति काफी कमजोर है। इनका सांस्कृतिक पहचान भी खतरे में है, क्योंकि पहले की अपेक्षा उनकी संस्कृति भी धीरे–धीरे विलुप्त होते जा रहा है। प्राप्त तथ्य से यह पता चला कि यह जंगल और पहाड़ में निवास करने वाला पहाड़िया जनजाति की जीवन चलाने का मुख्य साधन शिकार, खाद्य संग्रह और स्थानांतरण कृषी है। इसके अतिरिक्त भी यह जनजाति वनोपज की बिक्री द्वारा भी कुछ आय प्राप्त कर लेते हैं। वन उपज में मुख्य रूप से जलावन, बास, पत्ती, और कंदमूल आदि है। जिन्हें बाजार में बेचकर आय प्राप्त करते हैं, फिर भी इस जनजाति की जीविका का मुख्य साधन खेती है। खेती के माध्यम से अरहर, बाजरा और मकई जैसे कृषि करके उपज प्राप्त करते हैं। बहुत बड़ी मेहनत करके यह लोग कृषि करते हैं फिर भी इस खेती से इनको पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री प्राप्त नहीं होता है जिससे इनकी आर्थिक समस्या हमेशा बना रहता है। माल पहाड़िया जनजाति की निवास स्थान दुर्गम स्थान पर होने की वजह से यह लोग शिक्षा से भी वंचित हैं। क्योंकि इनके यहां विद्यालय का अभाव है और इन पर विशेष रूप से शिक्षा के माध्यम से ध्यान नहीं दिया जाता है। जिससे यह लोग प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करके ही अधिकांश लोग पढ़ाई छोड़ देते है और ऊच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। झारखंड एक जनजाति बहुल राज्य है फिर भी यहां की जनजातीय समाज की अनेक समस्याएं है। इसी में माल पहाड़िया जनजाति की भी समस्या है, क्योंकि यह जनजाति मुख्य रूप से झूम खेती करती है, और खेती पर ही निर्भर है, लेकिन जमीन की कमी और सरकारी प्रतिबंध के अनेक कारण की वजह से उनकी खेती सिकुड़ता जा रहा है। यह जनजाति के पास स्थाई कृषि योग्य भूमि नहीं है जिससे इनके पास खाद्य सुरक्षा का आभाव हमेशा बना रहता है। यह जनजाति सामान्य तौर पर जंगलों के किनारे या जंगल में

निवास करती हैं तथा वनों से उत्पाद प्राप्त करती हैं, जैसे लकड़ी, कंदमूल, औषधि, और जड़ी बूटी आदि। लेकिन सरकारी नीतियों और वनों के कटाव के कारण इनका समस्या हमेशा बना रहा है और आजीविका प्राप्त करने के अन्य साधन उनके लिए सीमित है। इन्हें शहरी क्षेत्र में रोजगार तलाशने के लिए पलायन करना पड़ रहा है जिसे यह जनजाति की समस्या दिन पर दिन लगातार बढ़ता जा रहा है। यह माल पहाड़िया जनजाति इतना शिक्षित नहीं है कि उन्हें कुशल श्रमिक का कार्य मिल सके। यह जनजाति इतनी सामाजिक, आर्थिक, और शैक्षणिक स्तर पर कमजोर है कि उनकी समस्या प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती हैं।

**कुंजी शब्द:- गरीबी, अवसर, बेरोजगारी, शिक्षा, संस्कृति, और निवास स्थान**

गोड्डा जिला के अंतर्गत बड़ा सिमड़ा गाँव मे निवास करने वाले माल पहाड़िया जनजाति की समस्याएं अनेक है। क्योंकि यह जनजाति प्राचीन जनजातियों में से एक है और यह मूलभूत सुविधाओं से वंचित है। क्योंकि अधिकांश माल पहाड़िया लोगों का कहना था कि उनके निवास स्थान पहाड़ियों के करीब है जिसके कारण वहां शिक्षा, चिकित्सा और सड़क जैसे अनेक मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। जिसके कारण यह लोग अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इन लोगों का कहना था कि कोई भी सरकार हमारे लिए वैसी योजना या वैसे व्यवस्था नहीं करती है जिससे हम लोगों का विकास हो। जिसके कारण हम लोग पारंपरिक तौर पर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। पारंपरिक तरीके से ही हर कार्य भी कर रहे हैं। कुछ पहाड़िया जनजाति लोगों के मानना था की सरकार हमारे लिए वैसे आर्थिक पैकेज के भी व्यवस्था नहीं करती है जिससे हमारे निवास स्थान के करीब मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हो जैसे शिक्षा चिकित्सा आदि। इन लोग का मानना है कि हमें आवागमन में भी बहुत समस्या का सामना करना पड़ता है। क्योंकि दुर्गम स्थान पर निवास होने के वजह से राजनीतिक लोगों का ध्यान बहुत कम होता है। जिससे उनकी समस्या पर प्रमुखता से विचार नहीं किया जाता है और ना ही इनके बारे में कोई वैसे योजना बनाया जाता है जिससे इनको अधिक से अधिक लाभ मिल सके। यही कारण है कि यह जनजाति आज भी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक जैसे अनेक मूलभूत सुविधाओं से वंचित है।

**साहित्य पुनरावलोकन:-**

भारत के संदर्भ में, विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पी. वी. टी.) की अधिकारी तौर पर जनजातीय समुदाय की एक अलग श्रेणी के रूप में मान्यता दी गई है। भारत सरकार इस समुदाय को पहचान कर इनको उसे श्रेणी में रखा है जिनका कृषि का स्तर कम हो, साक्षरता दर कम हो, तथा घटती आबादी शामिल हो। भारत के संविधान में यह जनजाति समुदाय का विशिष्ट रूप से इनका सुरक्षा और कल्याण का प्रावधान है। इसके बावजूद भी यह समुदाय के लोगों को भूमि अधिग्रहण, विस्थापन गरीबी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच बहुत कम है। यह लोग पारंपरिक ज्ञान प्राणियों के नुकसान जैसे अनेक मुद्दे से गुजर रहे हैं। झारखंड पूर्वी भारत का एक राज्य है, जहां पहाड़िया जनजाति सहित अनेक जनजाति के लोग निवास करते हैं। यह लोग झारखंड के वन क्षेत्र में निवास करते आ रहे हैं और यह लोग झूम खेती, शिकार और खाद्य संग्रह पर निर्भर है। लेकिन वनों की कटाई ने ईनके जीवन को ही बदल दिया है जिससे इन जनजाति समुदाय की पारंपरिक जीविका, संस्कृति और पर्यावरण का गंभीर खतरा पैदा हुआ है (**Soren eti all, 2024**)। भारत में आदिवासी समुदाय और कमजोर आदिवासी समूह (पी. टी.जी.) जिन्हें आदिम आदिवासी समूह के रूप में जाना जाता है। यह जनजाति दुर्गम जंगलों, पहाड़ी घाटियों और नदियों के करीब निवास करते हैं। यह जनजाति की आबादी में समय के साथ–साथ उतार चढ़ाव आया है। झारखंड मे 2-23 लाख पी वी टी समुदाय के लोग निवास करते हैं। लेकिन उनकी समस्या हमेशा बना रहा है। यह लोग अनेक बीमारी की चपेट में आए हैं जिसके कारण इनकी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है (**Rao & Das, 2021**)। भारत सरकार ने 2006 में आदिम जनजाति

समूह का नामकरण बदलकर विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह किया है। यह जनजाति की कुछ विशेषताएं हैं जिसके कारण इनका एक अलग पहचान प्रदान करती है जैसे इनका ज्यादातर आबादी कम है, यह शारीरिक रूप से अलग–अलग होते हैं, इनमें लिखित भाषा का अभाव पाया जाता है, और यह लोग आमतौर पर सरल तकनीकी का उपयोग करते हैं, इनमें बदलाव की गति धीमी होती है। जनगणना 2011 के अनुसार इनकी आबादी झारखंड में 292358 है तथा गोड्डा जिला में इनका आबादी 16183 है (**Prakash & Jayaswal**, 2020)। भारत में खाद्य सुरक्षा की कमी सबसे अधिक आदिवासी आबादी में है। इसमें भी सबसे अधिक कमजोर जनजातीय समूह में है। इस जनजाति समूह की वन आधारित आजीविका, कृषि आधारित जीवन, अत्यंत कम साक्षरता, कम अर्थव्यवस्था और घटी जनसंख्या जैसे अनेक विशेषताएं हैं। इन्हीं सब के कारण इनका अस्तित्व भी खतरे में है। झारखंड में माल पहाड़िया जनजाति समुदाय के लोगों के बीच खाद्य पदार्थ का भारी अभाव पाया गया है जिसके कारण इन लोगों के बीच अनेक समस्या उत्पन्न हो रहा है (**Das eti all, 2016**)। पहाड़िया जनजाति झारखंड की आदिम जनजातियों में से एक है। यह जनजाति झारखंड राज्य के दुमका, पाकुड़, गोड्डा और साहिबगंज जिले में स्थाई तौर पर निवास करती है। यह जनजाति आर्थिक रूप से बहुत कमजोर है तथा आय का इनका साधन कृषि एवं मजदूरी है। कृषि में बींस, मक्का, रागी (बाजरा )और अरहर की खेती करते हैं जिससे इनका जीवन यापन होता है। पहाड़िया लोगों का मुख्य समस्या यह है की इनका शैक्षणिक स्थिति बहुत कम है इसलिए यह लोग कुशल जीवन यापन नहीं करते हैं। शारीरिक श्रम ही इनका एकमात्र संसाधन है, यह जनजाति मजदूरी कार्य के लिए दूसरे राज्य में पलायन कर जाते हैं तथा वहां मजदूरी कार्य करके आय प्राप्त करते हैं। झारखंड में आदिवासी परिवारों के लिए भरण–पोषण के लिए पर्याप्त उत्पादन नहीं है। क्योंकि इनके पास जो भूमि है वह अपर्याप्त शुष्क और असंचित है। इसलिए कम उत्पादन होता है और खाद्य पदार्थ की समस्या बना रहता है (**Jha, 2017**)। माल पहाड़िया जनजाति राजमहल पहाड़ियों और संथाल परगना के पहाड़ी क्षेत्र की पहाड़ी श्रृंखला में निवास करती है। यह पहाड़िया जनजाति ऑस्ट्रिक भाषा परिवार के ऑस्ट्रो एशियाटिक उप परिवारों से संबंधित है। यह जनजाति अपनी संस्कृति परंपरा और भाषा को संरक्षित किए हुए हैं। इन जनजातियों की भाषा संथाली, बंगाली और हिंदी का मिश्रण है। पहले इनकी अपनी भाषा थी लेकिन वह अब संथाली, हिंदी और बांग्ला भाषाओं का मिश्रण बोलते हैं। इसलिए माल पहाड़िया जनजाति की भाषा न केवल खतरे में है बल्कि उनकी संस्कृति भी खतरे में है। इसके परिणाम स्वरुप जगह–जगह पर कई कारणों की वजह से उनकी अखंडता और एक जुटता में बाधा भी आई है। माल पहाड़िया जनजाति जीवाद में विश्वास करती है और वह अपनी पूर्वजों की पूजा करती है। प्रकृति में भी विश्वास करती है और सूर्य, नदी, पहाड़, पेड़, पशु ,पक्षी ,पौधा और झरना जैसे प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा करते है (**Manna & Ghos,2015**)। माल पहाड़िया जनजाति पर्यावरण के साथ अधिक संस्कृति संबंधों को बढ़ावा देती हैं। ये लोग वन उत्पादन पर अधिक निर्भर महसूस करते हैं, इसके अलावा उनके पर्यावरण के साथ गहरा जुड़ाव है। आज वनों की कटाई हो जाने के वजह से इनका वनोत्पाद मे ह्रास हुआ है तथा वनों पर आत्मनिर्भरता कम हुआ है (**Choudhuri & Ramakarishnan**, 2025 )।

**शोध अंतराल:-** झारखंड एक आदिवासी बहुल राज्य है तथा यहां के कुछ जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आधार पर विकास हुआ है। लेकिन माल पहाड़िया जनजाति ऐसी प्राचीन जनजातियों में से एक है जिसमें सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक विकास की गति बहुत धीमा है। यह जनजाति की जनसंख्या तो बढ़ रही है लेकिन उनकी विकास की गति बहुत ही कम है। जिसके कारण यह जनजाति अनेक समस्याओं से गुजर रही है। इसलिए इस जनजाति की मुख्य समस्या पर शोध बहुत कम हुए हैं, इसलिए इस जनजाति की मुख्य समस्या जानकर उसका उजागर करना बहुत जरूरी है। ताकि उनकी समस्या को प्रखरता से समझा जा सके।

**उद्देश्य :- माल पहड़िया जनजाति की वर्तमान समस्या को समझना**

**आँकड़ों के संकलन की विधि :-**

माल पहाड़िया जनजाति की समस्याओं से संबंधित आंकड़े प्राप्त करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग कर तथ्य प्राप्त किया गया है। गुणात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत माल पहाड़िया जनजातियों से उनके व्यक्ति क लिखो और साक्षात्कार विधियों का प्रयोग कर उनके समस्याओं से संबंधित तथ्य को प्राप्त किया गया है। यह शोध प्रविधि के माध्यम से उनके मुख्य समस्या क्या है और वह किस स्थिति में निवास कर रहे हैं। वर्तमान समस्या क्या है इन सभी से संबंधित तथ्य को प्राप्त करते समय गुणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग कर वास्तविक जानकारी के माध्यम से तथ्य को प्राप्त किया गया है। मात्रात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत अवलोकन, रिपोर्ट और रिव्यू आदि के माध्यम से तथ्य प्राप्त किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र कार्य झारखंड राज्य के गोड्डा जिला के बोआरीजोर तहसील के अंतर्गत केंदुआ ग्राम पंचायत के बड़ा सिमड़ा गांव के 40 पुरुषों का साक्षात्कार कर तथ्य प्राप्त किया गया है। यह गांव बिल्कुल ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आता है। पहले यह गाँव छोटा सिमड़ा नामक स्थान पर बसा हुआ था किंतु बाद मे माइग्रेट होकर लोग बाड़ा सिमड़ा मे स्थाई रूप से निवास कर रहे है। यह गांव जंगली क्षेत्र के करीब है तथा यह गाँव के सामने एक पहाड़ है जिसका नाम कलेश्वरी पहाड़ है। यह समाज में बाहरी संस्कृतियों का प्रभाव बहुत कम पड़ा है जिसके कारण यहां के माल पहाड़िया जनजाति आज भी अपने संस्कृति को बचाए हुए हैं फिर भी कुछ संस्कृतियों का ह्रास भी हुआ है।

**विश्लेषण** :— झारखंड में जनजातीय निवास का इतिहास बहुत पुराना है। यहां प्राचीन काल से ही जनजातीय समाज के लोग निवास करते आ रहे हैं। इनका आरंभिक जीवन बिल्कुल सादा और सरल था। यह लोग अपना अजीवका जंगलों द्वारा प्राप्त उत्पाद के माध्यम से करते थे। जैसे जंगलों से कंदमूल, फल–फूल इकट्ठा करना, और जड़ी बूटी प्राप्त करना आदि के माध्यम से अपने यह भोले–भाले जनजाति अपना जीवन चलाते थे। लेकिन समय के साथ इसमें काफी परिवर्तन आया है। माल पहाड़िया जनजाति यह ऐसी जनजाति है जो प्राचीन जनजातियों की श्रेणी में आती है। झारखंड में इनका पारंपरिक इतिहास बहुत लंबा है फिर भी यह जनजातीय समाज की जनसंख्या तो समय अनुसार बढ़ रहा है लेकिन उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षणिक जैसे अनेक समस्याएं हैं। क्योंकि माल पहाड़िया जनजाति का निवास स्थान किसी विशेष दुर्गम स्थान पर है जिसके वजह से यह लोग विकास के मुख्य धारा से अलग रहे हैं। यही कारण है कि यह लोग अभी भी शिक्षा, चिकित्सा जैसे अनेक समस्याओं से गुजर रहे हैं। यह जनजाति की राजनीतिकरण बहुत कम हुआ है यही कारण है कि यह समुदाय अत्यंत कमजोर है जिस पर विचार करना अति आवश्यक है ताकि उनकी समस्याओं से लोग रूबरू हो सके।

**माल पहाड़िया जनजाति की जनसंख्या आरोही क्रम मे**:— माल पहाड़िया की जनसंख्या 1941 मे 40148 था जो अब बढ़कर 135797 हो गया है अतः स्पष्ट रूप से पता है की इस समुदाय की जनसंख्या मे बढ़ोतरी हुआ है।

| वर्ष | 1941 | 1961 | 1971 | 1981 | 1991 | 2001 | 2011 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरुष | ------ | 22750 | 24424 | 39810 | ----- | 58067 | 67791 |
| महिला | ------ | 22673 | 24212 | 39512 | ------ | 57026 | 68006 |
| कुल | 40148 | 45423 | 48636 | 79322 | 79154 | 115093 | 135797 |

सारणी से स्पष्ट रूप से पता चलता है की माल पहाड़िया जनजाति की जनसंख्या मे लगातार बृद्धि हुई है, सिर्फ 1991मे बृद्धि की गति थोड़ा मंद था।

**शोध का महत्व :-**

- माल पहाड़िया जनजाति की पहचान खतरे में है इसलिए इनके ऊपर विचार करने की आवश्यकता है।
- माल पहाड़िया जनजाति अत्यंत कमजोर समुदाय के अंतर्गत आते हैं इनकी हो रही समस्याओं को जानना बहुत जरूरी है।
- माल पहाड़िया जनजाति का संवर्धन कैसे किया जा सकता है इस पर विचार करने की आवश्यकता है।
- माल पहाड़िया जनजाति की अस्मिता को कैसे बचाया जा सकता है तथा उनके वर्तमान में आवश्यकता क्या है। समाज के मुख्य धारा से बिछड़ने के यह प्राचीन जनजाति के क्या–क्या करण है इसको जानना बहुत जरूरी है।
- माल पहाड़िया जनजाति की हर एक बिंदुओं पर विचार करना यह शोध के सबसे बड़ी महत्व है।

**निष्कर्ष :-**

झारखंड राज्य में 32 प्रकार की जनजातीय निवास करती है। जिसमें से आठ (8) जनजातीय ऐसे हैं जो प्राचीन जनजाति है। इन्हीं को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह कहा जाता है। इन्हीं में से एक जनजाति माल पहाड़िया है जिनकी वर्तमान में अनेक समस्याएं हैं। एक ओर आजाद भारत में जहां सभी वर्ग का विकास हो रहा है चाहे वह जनजातीय समाज ही क्यों न हो वही यह जनजाति इतनी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक के साथ–साथ आवास, आवागमन, चिकित्सा जल की उपलब्धता और खाद्य पदार्थ जैसे अनेक सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं। इनकी आबादी मे भले ही थोड़ा सा बृद्धि हुआ हो लेकिन इनकी जिनमिन समस्या आज भी इनको झक झोरती है। यह समुदाय से तथ्य प्राप्त किया गया तो पता चला कि यह समुदाय आज भी मूलभूत सुविधाओं के लिए तड़प रहे हैं। सरकार इनके लिए नए–नए योजना तो लॉन्च करती है लेकिन वह योजना धरातल पर नहीं उतर पता है जिसका परिणाम यह है कि यह समुदाय के लोग उसका खामियाजा भुगत रहे हैं। इनके निवास स्थान पहाड़ों के करीब है जहां राजनीतिज्ञ लोगों का भी ध्यान आकर्षित नहीं हो रहा है और न ही उनके प्रति और उनके विकास के प्रति सरकार संवेदनशील है। इनके निवास स्थान के करीब न तो कोई विद्यालय है और न ही स्वास्थ्य केंद्र है जिसके कारण इन लोगों के तमाम समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अधिकांश लोगों का कहना था कि हमारे ऊपर विशेष ध्यान ही नहीं दिया जाता है और न ही हमारे पास इतनी व्यवस्था या संसाधन है जिसे हम अपने हर मूलभूत सुविधाओं का प्राप्त कर सकें यही सब कारण है कि हम जैसे जनजाति समुदाय के लोग अनेक समस्याओं से गुजर रहे हैं।

## संदर्भ सूची:-


- Jha, N. (2017). Migration of Paharia Tribes from Pakur District (Jharkhand). *RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary*. 2 (3). 38-39. Retrieved from. https://old.rrjournals.com/wp-content/uploads/2020/12/38-40_RRIJM20170203012.pdf
- Manna, S. & Ghosh, A. (2015). Endangered Culture and Dialects with special reference to Mal Paharia - A Primitive Tribal Group of Jhakhand. *ResearchGate.* Retrived from. https://www.researchgate.net/publication/315548823
- Chaudhuri, S. S., & Ramakrishanan, M. (205). A prefatory note on the cultural ecology of the mal pahariyas of jharkhand. *International Journal of Research – granthaalayah.*13 (2). 160-162. DOI 10.29121/granthaalayah.v13.i2.2025.5997
- Rao, M. R., K. & Das, M., K. (201). Malaria among the Sauria Paharia, a primitive and vulnerable tribe of Jharkhand state, India. *Clinical Epidemiology and Global Health.* 11 (6). 1-2. DOI:10.1016/j.cegh.2021.100778
- Soren, D. Rana, N. K., Sharma, L. (2024). A Geographical Appraisal of Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTGs) of Jharkhand and their Susceptibility to Environmental Hazards. *International Journal for Multidisciplinary Research.* 6 (4). 1-3. Retrieved from. https://www.ijfmr.com/papers/2024/4/24425.pdf
- Prakash, K. O., & Jayaswal, M. (2020). Prevalence of spiritual intelligence among mal paharia (PVTG) youth. *The International Journal of Indian Psychology.* 8 (3). 945-947. DOI: 10.25215/0803.102
- Das, A. Saha, A. (2016). status of food security entitlements across particularly vulnerable tribal group (pvtg) pockets in Jharkhand. *BMJ Glob Health* 1 (1). 6-7. DOI:10.1136/bmjgh-2016-EPHPabstracts.8